

# Annapurna Stotram

॥ श्री अन्नपूर्णा स्तोत्रम् ॥

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी  
निर्धूताखिलधोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।  
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥१॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी  
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्विजकुम्भान्तरी ।  
काश्मीरागरुवासिताङ्गरुचिरे काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥२॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी  
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।  
सर्वैश्वर्यसमस्तवाजिष्ठतकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥३॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी  
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी ।  
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥४॥

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी  
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्गुरी ।  
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥५॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी  
काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्गुरा शर्वरी ।  
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥६॥

उर्वासर्वजनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी  
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।  
सर्वानन्दकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥५॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी  
वामं स्वादुपयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।  
भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥७॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी  
चन्द्रार्कग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।  
मालापुस्तकपाशासाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥८॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी  
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी ।  
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी  
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥९॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे  
शङ्करप्राणवल्लभे ।  
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थ  
भिक्षां देहि च पार्वति ॥१०॥

माता च पार्वती देवी  
पिता देवो महेश्वरः ।  
बान्धवाः शिवभक्ताश्च  
स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥११॥